अध्याय 7

विपत्तियाँ: जल का लहू बनना

फ़िरौन के अधिकार से इस्राएल को छुड़ाने के लिए मूसा के प्रथम प्रयास की असफलता के बाद (अध्याय 5; 6), अध्याय 7 परमेश्वर के लोगों को निकल जाने के लिए मिस्र के राजा से स्वीकृति पाने के सफ़ल प्रयास के आरम्भ की जानकारी देता है। दस महामारियों के द्वारा छुटकारा प्राप्त कर लिया गया। अतः इस्राएल के छुटकारे की कहानी विशाल रूप से महामारियों की एक कहानी है जैसा कि अध्याय 7 से 13 तक दी गई है।

अध्याय 7 मूसा की शिकायत कि वह "बोलने में भद्दा है" (6:30), के प्रति परमेश्वर के प्रत्युत्तर के साथ आरम्भ होता है। जिस प्रकार सीनै पर्वत पर परमेश्वर ने प्रबन्ध किया उसी प्रकार उसने मूसा की कमज़ोरी में उसके बोलने के लिए हारून (7:1, 2) को देते हुए प्रबन्ध किया। फ़िर से उसने संकेत दिया कि जब मूसा और हारून फ़िरौन से बात करेंगे तब क्या होगा (7:3-5)।

आगे, यह पाठ्य प्रकाशित करता है कि किस प्रकार मूसा और हारून ने परमेश्वर के निर्देशों का पालन किया (7:6, 7)। वे फ़िरौन के सम्मुख उपस्थित हुए, और यह माँग की कि वह इस्राएल को जाने दे और उसके सम्मुख एक चमत्कार दिखाया: हारून की लाठी सर्प बन गई। फ़िर मिस्र के जादूगरों ने भी अपने तंत्र-मंत्रों से वैसा ही किया और फ़िरौन ने इस्राएल के निवेदन को अस्वीकार कर दिया (7:8-13)।

तब, परमेश्वर के कहने पर मूसा और हारून फ़िरौन के सम्मुख गए और उसे चेतावनी दी कि परमेश्वर, मिस्र के जल को लहू में बदल देगा। इस प्रकार पहली महामारी आयी (7:14-21)। जब मिस्र के जादूगरों ने अपने तंत्र-मंत्रों से वैसा ही किया तो फ़िरौन का मन कठोर हो गया और उसने इस्राएल के निवेदन को अस्वीकार कर दिया (7:22-25)।

सफ़लता के लिए परमेश्वर का वायदा (7:1-7)

[1]तब यहोवा ने मूसा से कहा, "सुन, मैं तुझे फ़िरौन के लिये परमेश्वर सा ठहराता हूँ; और तेरा भाई हारून तेरा नबी ठहरेगा। [2]जो जो आज्ञा मैं तुझे दूँ वही

तू कहना, और हारून उसे फ़िरौन से कहेगा, जिससे वह इस्राएलियों को अपने देश से निकल जाने दे। 3परन्तु मैं फ़िरौन के मन को कठोर कर दूँगा, और अपने बहुत से चिह्न और चमत्कार मिस्र देश में दिखलाऊँगा। 4तौभी फ़िरौन तुम्हारी न सुनेगा; और मैं मिस्र देश पर अपना हाथ बढ़ाकर मिस्रियों को भारी दण्ड देकर अपनी सेना अर्थात् अपनी इस्राएली प्रजा को मिस्र देश से निकाल लूँगा। 5और जब मैं मिस्र पर हाथ बढ़ाकर इस्राएलियों को उनके बीच से निकालूँगा, तब मिस्री जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ।" 6तब मूसा और हारून ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार ही किया। 7जब मूसा और हारून फ़िरौन से बात करने लगे तब मूसा अस्सी वर्ष का, और हारून तिरासी वर्ष का था।

आयतें 1, 2. यहोवा ने **मूसा** के साथ अपना कार्य आरम्भ किया। इस्राएल को छुड़ाने के लिए असफ़ल प्रयास (4:29-6:9) के बाद और मूसा को फ़िर से नई बुलाहट देने के बाद (6:10-13, 28, 29) सम्भावित रूप से एक लम्बा समय बीत गया होगा। ऐसा लग रहा था कि मूसा अपने पूर्व के विरोध को और परमेश्वर के पूर्व प्रबन्ध को भूल गया (4:10-16; देखें 6:12, 30)। फ़िर भी परमेश्वर, मूसा के साथ धीरजवन्त बना रहा। उसने मूसा के भूलने अथवा अविश्वसनीयता के लिए उसे डाँटा नहीं परन्तु मात्र उसने वही बात दोहराई जो उसने पहले कही थी (3:10; 4:15, 16, 22, 23)। **हारून**, मूसा की ओर से बोलने वाला व्यक्ति होगा जिस प्रकार **नबी** परमेश्वर की ओर से बोलने वाले लोग हैं और सन्देश प्राप्त करने वाला व्यक्ति **फ़िरौन** होगा।

आयतें 3, 4. परमेश्वर मूसा को निरन्तर चेतावनी देता चला गया कि वह **फ़िरौन के मन को कठोर** कर देगा जिससे कि वह इस्राएल के लोगों के छुटकारे के लिए किए गए निवेदन को **न सुनेगा**। इस सन्देश ने मूसा को, परमेश्वर ने जो पूर्व में चेतावनियाँ दी थी उनका स्मरण दिलाया (3:19-22; 4:21)। ऊपरी तौर पर परमेश्वर चाहता था कि मूसा यह समझ ले कि वह किसी आसान काम के लिए नहीं बुलाया गया था; उसे एक ऐसे राजा से बात करनी थी जो किसी को स्वीकार नहीं करता था। सम्भावित रूप से परमेश्वर ने मूसा को पूर्व में ही फ़िरौन की कठोरता के बारे में चेतावनी इसलिए दी कि मूसा निराश न हो अथवा हार न मान ले। उस समय के बाद के अवसरों पर जब परमेश्वर ने कुछ भविष्यद्वक्ताओं को बुलाया तब उसने उन्हें पूर्व में ही बताया कि उनके सुनने वाले प्राथमिक श्रोता उनके सन्देश की ओर ध्यान नहीं देंगे।

यह कथन "मैं फ़िरौन के हृदय को कठोर कर दूँगा" और इसी समान और कथन दस महामारियों की सम्पूर्ण घटना में और भी देखने को मिलते हैं (9:12; 10:1, 20, 27; 11:10; 14:4, 8, 17)। क्या इन प्रकटीकरणों का अर्थ यह है कि परमेश्वर ने फ़िरौन का हृदय उसकी इच्छा के विरुद्ध कठोर कर दिया जिसमें चुनाव करने की स्वतन्त्रता ले ली गई और दिव्य योजना में उसे मात्र एक कठपुतली बना दिया गया? यहाँ पर जब हम देखते हैं कि परमेश्वर ने फ़िरौन के हृदय को कठोर कर दिया तब निर्गमन में अन्य आयतें इस प्रकार कहती हैं कि फ़िरौन ने अपना हृदय

कठोर कर लिया (7:13, 14, 22, 23; 8:15, 19, 32; 9:7, 34, 35)। ऊपरी तौर पर, फ़िरौन ने मूसा की माँगों के प्रति नकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया करने का एक चुनाव किया। एक कठोर हृदय को प्रकट करने के बाद फ़िरौन परमेश्वर के द्वारा अतिरिक्त रूप से कठोर कर दिए जाने की एक वस्तु बन गया। जब कोई व्यक्ति अपना हृदय कठोर कर लेता है और नीचे की ओर का मार्ग चुन लेता है तब परमेश्वर इसकी स्वीकृति दे देता है - और यहाँ तक कि उसे ऐसा बना देता है कि - उसका मार्ग उसे सर्वनाश की ओर लेकर जाए।

जब फ़िरौन का हृदय कठोर कर दिया गया तब परमेश्वर ने इस्राएल को छुड़ाने के लिए चिह्न (אוֹת, *'ओथ)*, **चमत्कार** (מוֹפֵת, *मोपेथ)*, और **न्याय** (שְׁפָט, *शेपेट)* भेजने का मन बना लिया। निर्गमन के सम्पूर्ण घटनाक्रम में महामारियों को "चिह्न और चमत्कार" अथवा मात्र "चिह्न" (7:3; 8:23; 10:1, 2) और "न्याय" (7:4; 12:12), के साथ-साथ "महामारियाँ" (9:14; 11:1; 12:13) कहा गया। ये वर्णनात्मक शब्द एक "चोट" अथवा "मार" का सुझाव देते हैं जिनकी योजना परमेश्वर ने फ़िरौन के विरुद्ध छुटकारे के लिए बनाई।

अन्त में, परमेश्वर [अपनी] **सेना को निकाल** लाता है जिनकी पहचान **अपनी इस्राएली प्रजा** के रूप में की गई। "सेना" (צָבָא, *सबा')* शब्द "सेनाओं" का सुझाव देता है। बच निकलने वाले गुलाम सेनाओं के समान नहीं लग रहे थे परन्तु इस्राएल के लोगों में इतनी ताकत थी कि वे एक शक्तिशाली युद्ध सेना बन जाएँ। परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा अन्त में वे उस देश को जीतने के लिए अपने मार्ग में खड़े होते हुए प्रत्येक राष्ट्र को हरा देंगे, जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था।

सम्भावित रूप से इस पद से सबसे महत्वपूर्ण पाठ यह सीखना चाहिए कि *परमेश्वर नियन्त्रण में है।* परमेश्वर ने मूसा के द्वारा बात की; उसने फ़िरौन का हृदय कठोर कर दिया; उसने महामारियाँ भेजी; उसने लोगों को छुड़ाया; और वह, अन्त में ऊँचा उठाया गया, यहाँ तक कि मिस्र के लोगों के द्वारा भी ऊँचा उठाया गया। उन्होंने अन्त में यह पहचान की कि मूसा के परमेश्वर के सामर्थी हाथ के विरुद्ध उनके अनेक ईश्वर उनकी रक्षा करने में अयोग्य हैं। सम्पूर्ण निर्गमन में, यहोवा, "प्रकाशन और छुटकारे की और यहाँ तक कि वाचा के बलिदान की कहानियों में मुख्य रूप से सब-कुछ चलाने वाला एकमात्र जन है।"[1] इस पुस्तक के नाटक में मूसा ने एक भूमिका निभाई परन्तु इसका लेखक, निर्देशक और मुख्य चरित्र परमेश्वर था!

आयत 5. परमेश्वर के "चिह्नों," "चमत्कारों," और "न्याय" (7:3, 4) के परिणाम के रूप में, **मिस्री जान** लें कि **यहोवा** ही परमेश्वर है। इसका अर्थ मात्र यह नहीं है कि मिस्री यह जान लें कि यहोवा ने इस्राएली लोगों को इस योग्य बनाया कि वे गुलामी से बचकर निकल जाएँ। इसके स्थान पर, मिस्री यहोवा के बारे में कुछ जान लें जो वे पहले नहीं जानते थे। यहोवा को "जानने" का अर्थ है परमेश्वर के नाम से अधिक यहोवा परमेश्वर को जानना; यह इस प्रकार है कि उसके बारे में कुछ समझ प्राप्त करना - उसके स्वभाव, चरित्र, ताकत और उसकी सामर्थ के बारे में जानना। परमेश्वर ये महामारियाँ भेज रहा था जिससे मिस्री उसे "जान लें,"

अर्थात यह कि परमेश्वर मिस्रियों पर स्वयं के बारे में महान सच्चाइयाँ प्रकट करे। यह आवश्यक था कि अन्यजाति मिस्री भी उसे जानें।

आयत 6. परमेश्वर के सेवकों ने उसके आदेशों को माना: **तब मूसा और हारून ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार ही किया।** यह कथन न केवल (7:1-7 में) दिए गए वाक्यांश के लिए एक सही बैठने वाले निष्कर्ष के रूप में कार्य करता है, परन्तु यह कहानी के प्रति एक परिचय के रूप में भी काम करता है जो पंचग्रन्थ में निरन्तर पायी जाने वाली विषय-वस्तु - जैसे कि, परमेश्वर के लोगों की आज्ञाकारिता (देखें 7:20; 39:43), के अनुसार चलता है और उसका परिचय देता है। इसी बिन्दु से मूसा और हारून ने परमेश्वर के आदेशों को माना।

आयत 7. यह कथन कि **मूसा अस्सी वर्ष का, और हारून तिरासी वर्ष का था**, को प्रारम्भिक कथन माना जाए जिन्हें बीच में डाला गया जिससे कि कहानी के दो मुख्य चरित्रों के बारे में व्यक्तिगत सूचना उपलब्ध करवाई जा सके। यह भी पंचग्रन्थ का सूचक है। उत्पत्ति में बार-बार और तोरह की अन्य पुस्तकों में कुछ स्तर तक लेखक ने प्रत्येक उस व्यक्ति की आयु को प्रस्तुत किया जिसके विषय में वह लिख रहा था। सम्भावित रूप से यह पद इस बात की ओर भी संकेत करता है कि "अपने अनुभवी ज्ञान के गुण के कारण मूसा और हारून ने कुछ आदर पाने का अधिकार कमाया [था]।"[2] एक ऐसी आयु जिसमें वर्तमान में अनेक लोग सेवानिवृत्त हो जाते हैं, तब अस्सी वर्ष का मूसा अपने जीवन के जोखिम से भरे साहसिक कार्य का आरम्भ करने जा रहा था और ऐसे कार्य का आरम्भ करने जा रहा था जिसके लिए वह सदा के लिए याद रखा जाएगा।

लाठी का चमत्कार (7:8-13)

[8]फिर यहोवा ने मूसा और हारून से इस प्रकार कहा, [9]"जब फ़िरौन तुम से कहे, 'अपने प्रमाण का कोई चमत्कार दिखाओ,' तब तू हारून से कहना, 'अपनी लाठी लेकर फ़िरौन के सामने डाल दे कि वह अजगर बन जाए'।" [10]तब मूसा और हारून ने फ़िरौन के पास जाकर यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया; और जब हारून ने अपनी लाठी फ़िरौन और उसके कर्मचारियों के सामने डाल दी, तब वह अजगर बन गई। [11]तब फ़िरौन ने पण्डितों और टोनहा करनेवालों को बुलवाया; और मिस्र के जादूगरों ने आकर अपने-अपने तंत्र-मंत्र से वैसा ही किया। [12]उन्होंने भी अपनी-अपनी लाठी को डाल दिया, और वे भी अजगर बन गईं। पर हारून की लाठी उनकी लाठियों को निगल गई। [13]परन्तु फ़िरौन का मन और हठीला हो गया, और यहोवा के वचन के अनुसार उसने मूसा और हारून की बातों को नहीं माना।

आयतें 8-10. जब **पहली बार मूसा और हारून**, **फ़िरौन** के सम्मुख उपस्थित हुए तब उन्होंने कोई चमत्कार नहीं किया (5:1-4)। अगली बार जब वे उसके सम्मुख गए तब परमेश्वर ने उनसे कहा कि हारून की **लाठी** को **अजगर** (देखें 4:1-5) बनाने के द्वारा वे लोग अपना परिचय प्रकट करें। परमेश्वर के आदेश मानते हुए

वे **फ़िरौन** से मिले और हारून की लाठी अजगर बन गई।

आयत 10 से दो प्रश्न उत्पन्न होते हैं। पहला, पाठ्य यह बताता है कि **हारून ने अपनी लाठी ... डाल दी**; परन्तु पहली बार जब परमेश्वर, मूसा को दिखाई दिया तब वह मूसा की लाठी थी जो अजगर बनी (4:3)। क्या मूसा और हारून, दोनों ही की लाठी अजगर बन गई? सम्भावित रूप से यह वही लाठी थी जिसका प्रयोग मूसा करता था; यह सार्वजनिक सम्पत्ति बन गई जब परमेश्वर ने इसे मूसा और हारून के हाथों में सामर्थ से भर दिया। इसे मूसा की लाठी कहा जा सकता था (9:23; 10:13; 14:16), हारून की लाठी कहा जा सकता था (7:10-12), अथवा परमेश्वर की लाठी कहा जा सकता था (4:20)।

दूसरा, **अजगर** के लिए काम में लिए गए शब्द 4:3 (נָחָשׁ, *नखाश)* में और 7:10 (תַּנִּין, *थन्निन)* में अलग-अलग हैं। वास्तव में 7:10 में दिए गए शब्द *थन्निन* का अर्थ "मगरमच्छ" हो सकता है और इस कारण अम्बरटो कस्सूटो ने इसका अनुवाद इसी प्रकार किया।[3] जॉन आई. डर्हम ने इसका अनुवाद "एक दानवाकार सर्प" के रूप में किया है।[4] क्या अध्याय 7 में दिया गया यह जीव अध्याय 4 में दिए गए जीव से अलग प्रकार का था? हो सकता है कि अध्याय 7 में कोई मगरमच्छ अथवा कोई बड़ा जीव उत्पन्न किया गया हो साथ ही यह भी सम्भव है कि लेखक समानार्थी शब्द का प्रयोग कर रहा हो।[5] इन प्रश्नों के उत्तर कुछ भी हों परन्तु इससे पद का अर्थ प्रभावित नहीं होता: परमेश्वर ने फ़िरौन को दिखाने के लिए एक चमत्कार उपलब्ध करवाया कि मूसा और हारून उसके सन्देशवाहक हैं।

आयतें 11-13. जिस प्रकार से भी **फ़िरौन** को प्रभावित होना था वह प्रभाव उस समय समाप्त कर दिया गया जब **मिस्र के जादूगरों** ने आकर **अपने-अपने तंत्र-मंत्र** से वैसा ही किया। फ़िर भी, **हारून की लाठी** के द्वारा जादूगरों की **लाठियों** को निगल लिए जाने के द्वारा परमेश्वर ने मूसा और हारून के द्वारा किए गए चिह्न की सच्चाई को साबित किया। फ़िर भी, फ़िरौन हठीला बना रहा। फ़िरौन का मन **और हठीला हो गया**, और **यहोवा के वचन के अनुसार** उसने मूसा और हारून **की बातों को नहीं माना**।

जादूगर, किस प्रकार मूसा और हारून के चिह्नों के समान ही चिह्न दिखा पाए जबकि पाठ्य यह स्पष्ट करता है कि मूसा और हारून ने वास्तविक चमत्कार किए? कुछ लोगों का ऐसा मानना है कि जादूगर लोग, कुछ शैतानी ताकतों के द्वारा चमत्कारिक कार्य कर पाए। बाइबल के कुछ पद ऐसे सुझाते हुए लगते हैं कि एक समय में शैतान को इस प्रकार की शक्तियाँ दी गई (देखें 2 थिस्स. 2:9-12; प्रका. 13:14; 16:14; 19:20)।

एक बहुत ही उपयुक्त विवरण यह है कि मिस्री जादूगर किसी भी प्रकार का ऐसा चमत्कार करने में दक्ष थे जिसे कोई अन्य जादूगर प्रतिदिन किया करते थे: तथा लोगों को यह विश्वास दिलाते थे कि वे सब प्रकार के असम्भव कार्य कर सकते हैं जो चमत्कारी हो। नहूम एम. सर्ना ने यह कहते हुए इस विचार का समर्थन किया कि "उनकी [जादूगरों की] व्यावसायिक प्रदर्शनों की सूची में किसी प्रकार की युक्ति एक प्रामाणिक विषय हुआ करती थी।"[6]

चाहे किसी भी प्रकार का पक्ष हो, यहाँ पर पाठ्य इस बात को स्पष्ट करता है कि जादूगरों की ऊपरी ताकतों की तुलना में परमेश्वर की ताकतें अधिक प्रभावी थी। परमेश्वर की दिव्य ताकत से हारून के अजगर ने अन्य अजगरों को निगल लिया। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, परमेश्वर की ताकत उस समय अधिक स्पष्ट हो गई जब जादूगर लोग अनेक महामारियों के समान नहीं कर पाए। हालांकि यहाँ पर नाम नहीं दिया गया है परन्तु बाद के यहूदी, मसीही और अन्यजाति साहित्य, यन्नेस और यम्ब्रेस (देखें 2 तीमु. 3:8) के रूप में दो जादूगरों की पहचान करते हैं।

जल का लहू बनना (7:14-25)

परमेश्वर के निर्देश (7:14-19)

14तब यहोवा ने मूसा से कहा, "फ़िरौन का मन कठोर हो गया है और वह इस प्रजा को जाने नहीं देता। 15इसलिये सबेरे के समय फ़िरौन के पास जा, वह तो जल की ओर बाहर आएगा; और जो लाठी सर्प बन गई थी, उसको हाथ में लिए हुए नील नदी के तट पर उससे भेंट करने के लिये खड़ा रहना। 16और उससे इस प्रकार कहना, 'इब्रियों के परमेश्वर यहोवा ने मुझे यह कहने के लिये तेरे पास भेजा है कि मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे, जिससे वे जंगल में मेरी उपासना करें; और अब तक तू ने मेरा कहना नहीं माना। 17यहोवा यों कहता है, इससे तू जान लेगा कि मैं ही परमेश्वर हूँ; देख, मैं अपने हाथ की लाठी को नील नदी के जल पर मारूँगा, और जल लहू बन जाएगा, 18और जो मछलियाँ नील नदी में हैं वे मर जाएँगी, और नील नदी बसाने लगेगी, और नदी का पानी पीने के लिये मिस्रियों का जी न चाहेगा'।" 19फिर यहोवा ने मूसा से कहा, "हारून से कह कि अपनी लाठी लेकर मिस्र देश में जितना जल है, अर्थात् उसकी नदियाँ, नहरें, झीलें, और पोखरे, सब के ऊपर अपना हाथ बढ़ा कि उनका जल लहू बन जाए; और सारे मिस्र देश में काठ और पत्थर दोनों भाँति के जलपात्रों में लहू ही लहू हो जाएगा।"

आयतें 14, 15. जैसा कि इस्राएल के निकल जाने के लिए फ़िरौन को बाध्य करने के लिए लाठी को अजगर बनाने का चमत्कार असफ़ल रहा (7:13), **यहोवा ने मूसा** को अगले चिह्न के विषय में निर्देश दिए। यह पहली महामारी थी: जल को लहू बनाना। इस महामारी के कारण को परमेश्वर ने स्पष्ट कर दिया: फ़िरौन का मन **कठोर हो गया** था **और इस प्रजा के निकल जाने के लिए उसने मना कर दिया**। मूसा को बताया गया कि कब और किस प्रकार महामारी के विषय में घोषणा करनी है। उसे **सबेरे के समय ...** जाना था और **जो लाठी सर्प बन गई थी**, उसको हाथ में लिए हुए जाना था कि फ़िरौन से भेंट करे।

आयतें 16-18. जब वह बोले तब, मूसा को निम्नलिखित बातों को स्पष्ट करना था:

1. *उसे किसने भेजा* - **इब्रियों के परमेश्वर यहोवा** के द्वारा मूसा को भेजा गया।
2. *परमेश्वर की माँग* - परमेश्वर ने कहा, **"मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे,"** जिससे वे **जंगल में** मेरी **उपासना** करें।
3. *फ़िरौन का पिछला प्रत्युत्तर* - फ़िरौन ने सुनने से मना कर दिया।
4. *महामारी भेजने का परमेश्वर का उद्देश्य* - वह चाहता था कि फ़िरौन और सब मिस्री यह **जान** लें कि **यहोवा** ही परमेश्वर है।
5. *महामारी किस-किस वस्तु को शामिल करेगी* - **जल लहू** में परिवर्तित हो **जाएगा**, **मछलियाँ मर** जाएँगी और **मिस्रियों**, **नील** से **पानी** नहीं पी सकेंगे।

यह महामारी इस्राएल की स्वतन्त्रता के लिए किसी निवेदन के साथ नहीं थी परन्तु इस्राएल को मिस्र से निकल जाने के लिए फ़िरौन के पिछली बार मना कर दिए जाने के परिणाम के रूप में इसकी घोषणा की गई। परमेश्वर ने मूसा से यह नहीं कहा कि वह फ़िरौन से कहे, "जब तक तुम इस्राएल को जाने नहीं दोगे तब तक इस महामारी का अनुभव करते रहोगे।" इसके स्थान पर, उसने फ़िरौन से कुछ ऐसा कहने के लिए कहा: "क्योंकि तुमने इस्राएल को निकल जाने की स्वीकृति देने से मना कर दिया, तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम इस महामारी का अनुभव करोगे।"

आयत 19. मूसा ने आने वाली महामारी की घोषणा करने के बाद **हारून** को निर्देश दिया कि [वह] **लाठी लेकर अपना हाथ बढ़ा** और **मिस्र** में जितना **जल** है उसे **लहू** बना दे। महामारी से **मिस्र** में सब लोग प्रभावित हो जाएँगे; **नदियाँ** ("जलधाराएँ"; NIV), **नहरें** ("नहरें"; NIV), **पोखर** ("तालाब"; NIV), **झीलें**, और **काठ के जलपात्रों** और **... पत्थर के जलपात्रों में लहू ही लहू हो जाएगा**। मूल इब्रानी पाठ्य में "जलपात्रों," शब्द नहीं दिया गया है। इसके स्थान पर यह मात्र इस प्रकार कहता है "काठ और पत्थर में" (וּבָעֲצִים וּבָאֲבָנִים, *उबा'एट्सिम उबा'बनिम)*। NIV इस पद का अनुवाद इस प्रकार करती है कि इस पद का अर्थ "काठ के बर्तन और पत्थरों के मटके" आ सके। रोलिंगसन ने यह सुझाया कि पाठ्य, काठ और पत्थर की होदों का संकेत देता है जिनका प्रयोग घरों में नील का जल एकत्रित करने के लिए किया जाता था।[7]

मूसा और हारून की आज्ञाकारिता (7:20-25)

[20]तब मूसा और हारून ने यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया, अर्थात् उसने लाठी को उठाकर फ़िरौन और उसके कर्मचारियों के देखते नील नदी के जल पर मारा, और नदी का सब जल लहू बन गया। [21]और नील नदी में जो मछलियाँ थीं वे मर गईं; और नदी से दुर्गन्ध आने लगी, और मिस्री लोग नदी का पानी न पी सके; और सारे मिस्र देश में लहू हो गया। [22]तब मिस्र के जादूगरों ने भी अपने तंत्र-

मंत्रों से वैसा ही किया; तौभी फ़िरौन का मन हठीला हो गया, और यहोवा के कहने के अनुसार उसने मूसा और हारून की न मानी। 23फ़िरौन ने इस पर भी ध्यान नहीं दिया, और मुँह फेर के अपने घर चला गया। 24और सब मिस्री लोग पीने के जल के लिये नील नदी के आस पास खोदने लगे, क्योंकि वे नदी का जल नहीं पी सकते थे। 25जब यहोवा ने नील नदी को मारा था तब से सात दिन हो चुके थे।

आयत 20. लेखक ने फ़िर से कहा कि **मूसा और हारून**, **यहोवा** के प्रति आज्ञाकारी थे। जिस प्रकार **परमेश्वर ने आज्ञा दी थी** और जिस प्रकार मूसा ने कहा, हारून **ने लाठी को उठाकर ... नील नदी के जल पर मारा, और नदी का सब जल लहू बन गया**। इस प्रदर्शन के लिए मूसा और हारून के पास दर्शक थे; वहाँ पर फ़िरौन ही उपस्थित नहीं था परन्तु **फ़िरौन** के अनेक **कर्मचारी** भी वहाँ पर थे। इन कर्मचारियों में सम्भावित रूप से उच्च राजकीय अधिकारी शामिल थे, जो कि सम्भवतया राजा के सलाहकार परिषद में पाए जा सकते हैं।

आयत 21. इस महामारी का एक परिणाम यह रहा कि **नील नदी** में जो **मछलियाँ** थीं वे मर गईं; और नदी से **दुर्गन्ध आने लगी**, सम्भावित रूप से मछलियों के मरने के कारण उसमें दुर्गन्ध आने लगी। मिस्री मस्तिष्क पर जिस परिमाण के साथ इस महामारी ने प्रहार किया वह लगभग समझ से बाहर है। मिस्र के जीवन का स्त्रोत नील थी; इसके जल के बिना मिस्र का अस्तित्व नहीं था। आर. एलन कोल ने लिखा, "नील को एक देवता मानते हुए उसकी पूजा की जाती थी और ... उसका जल मिस्र का जीवनदायी लहू था।"[8] इस महामारी ने नील नदी को लगभग व्यर्थ बना दिया। यह **मिस्रियों** को, जिनमें से अधिकतर लोग उस नदी की कुछ मील की दूरी पर ही रहते थे, अब उनकी आधारभूत आवश्यकताएँ उपलब्ध नहीं करवा सकती थी। वे लोग इसकी मछलियों को खा नहीं सकते थे जिस पर वे अपने प्रमुख भोजन के रूप में निर्भर रहते थे। आगे, **वे** [उसका] **पानी पी न सके** अथवा खेती के लिए उसका प्रयोग नहीं कर सके।

इस पहली महामारी के बारे में एक प्रश्न उत्पन्न होता है वह यह है "क्या जल का पानी वास्तविक **लहू** में परिवर्तन हो गया था?" क्या उस जल में मिट्टी, लाल मिट्टी अथवा काई मिला दी गई थी जिसके कारण वह लहू जैसा बन गया और जिसके कारण मछलियाँ मर गई? कुछ लोग बलपूर्वक ऐसा कहते हैं जैसा कि पाठ्य "लहू," कहता है, इसका अर्थ "लहू" है और इस शब्द से कुछ अन्य अर्थ निकालने का प्रयास करने का अर्थ, गलतफ़हमी का शिकार होना है। "लहू" (דָּם, *डैम)* के लिए अनुवादित शब्द, पुराना नियम में सामान्य शब्द "लहू" है। आगे, जो लोग परमेश्वर में विश्वास रखते हैं उन्हें यह सच्चाई स्वीकार करने में कठिनाई नहीं होती कि उसने वास्तविक जल को वास्तविक लहू में परिवर्तित कर दिया, जब उसने ऐसा करने का चुनाव किया। इन सबके बाद, यीशु ने वास्तविक जल को वास्तविक दाखरस में परिवर्तित करने के द्वारा अपनी सामर्थ प्रकट की (यूहन्ना 2:6-10)।

जो लोग ऐसा मानते हैं कि जल, वास्तविक लहू में परिवर्तित नहीं हुआ वे लोग, इस पाठ्य के साथ बिना कोई अन्याय किए अथवा परमेश्वर के चमत्कार

करने की योग्यता को अस्वीकार करते हुए, सम्भावित रूप से यह विचार रखते हैं। प्राचीन समय के लोग, पदार्थों पर आधुनिक रसायन विश्लेषण करने में अयोग्य थे। यह सम्भव है, कि इस कारण, लेखक - और महामारी से प्रभावित लोगों को वह पदार्थ लहू जैसा दिखाई दिया; इस कारण लेखक ने उसे लहू कहा (देखें 2 राजा 3:22, 23)। अन्य शब्दों में, "यहाँ पर जो सोचा गया वह किसी प्रयोगशाला विश्लेषण के आधार पर नहीं पर बाहरी रूप से दिखाई देने वाले दृश्य के आधार पर था।"[9] 7:20 के अनुसार, नील का जल लहू बन गया, परन्तु 7:24 कहता है कि महामारी के कारण "मिस्री लोग ... नदी का जल नहीं पी सकते थे।" जल लहू बन गया था परन्तु पद ऐसा कहता है कि नील अब भी जल था। ऊपरी तौर पर इस वाक्यांश की व्याख्या करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि ऐसा कहा जाए कि लेखक अपने पाठकों को ऐसा बता रहा था कि जल, लहू के समान किसी चीज़ में परिवर्तित हो गया था और सम्भावित रूप से उसका स्वाद भी लहू जैसा था परन्तु उसे देखने से यह जाना जा सकता था कि वह लाल है, जिसमें से दुर्गन्ध आ रही थी, वह पीने योग्य नहीं था और इस स्तर तक दूषित हो गया था कि उसमें रहने वाली मछलियाँ मर गई।

आयतें 22, 23. नील पर प्रहार होना एक विपत्ति थी परन्तु जब **जादूगरों** ने भी अपने तंत्र-मंत्रों से **वैसा ही किया** (इसमें सन्देह नहीं कि यह एक छोटे स्तर पर किया गया) **तौभी फ़िरौन का मन हठीला हो गया**। उसने उस बात पर **ध्यान नहीं दिया** जो **परमेश्वर के कहने के अनुसार** थी अथवा उसके लोग किस प्रकार की समस्या का सामना कर रहे थे, और अपने महल की ओर लौट गया।

आयतें 24, 25. लेखक ने ऐसा नहीं कहा कि इस महामारी ने **मिस्री लोगों** को पूरी तरह से बिना जल के छोड़ दिया। वे लोग **पीने के जल के लिये नील नदी के आस-पास** खोदने लगे। यह वाक्य कि **जब यहोवा ने नील नदी को मारा था तब से सात दिन हो चुके थे** सम्भावित रूप से यह संकेत देता है कि पहली महामारी सात दिन तक बनी रही।

अनुप्रयोग

परमेश्वर संसार में किस प्रकार काम करता है (7:1-10)

निर्गमन की पुस्तक, बाइबल की अन्य पुस्तकों के समान, इसलिए लिखी गई कि परमेश्वर को प्रकाशित किया जा सके जिससे कि हम उसे और अधिक अच्छी प्रकार से जान सकें। एक बात जो यह पुस्तक प्रकट करती है वह यह है कि परमेश्वर संसार में किस प्रकार काम करता है। निर्गमन बताता है कि परमेश्वर, मनुष्य के साथ शामिल हो जाता है। वह ऐसा परमेश्वर नहीं है, जैसा कि ईश्वरवाद सुझाता है, जो कि बहुत दूर रहता हो, संसार से निकाल दिया गया हो और अपनी सृष्टि का ख्याल नहीं रखता हो। वह कोई ऐसा परमेश्वर नहीं है जो किसी बात में शामिल नहीं होता, न ही ऐसा लापरवाह परमेश्वर है जिसने इस संसार को बनाया और फ़िर इसमें से स्वयं को निकाल लिया कि यह संसार स्वयं कार्य करता रहे और स्वयं

ही नष्ट हो जाए। पुराना नियम और नया नियम दोनों ही यह सिखाते हैं कि परमेश्वर ने मानव इतिहास में हस्तक्षेप किया। उसने इस्राएली लोगों को गुलामी से छुड़ाने के लिए हस्तक्षेप किया। अब्राहम से किए अपने वायदे के अनुसार उसने यीशु मसीह को भेजने के द्वारा हस्तक्षेप किया जिससे मानवजाति को पाप से और इसके परिणामों से बचाया जा सके।

बीते समय में परमेश्वर ने किस प्रकार कार्य किया है? वर्तमान में वह किस प्रकार कार्य करता है?

पहला, बीते समय में परमेश्वर ने चमत्कारों के द्वारा कार्य किया। परमेश्वर चमत्कार करने में सक्षम है और उसने मानव इतिहास में ऐसा किया। बाइबल प्रायः उन चमत्कारों के बारे में बताती है जो परमेश्वर ने किए; निर्गमन चमत्कारों से भरा हुआ है। जिनमें जलती हुई झाड़ी, दस महामारियाँ, चमत्कारी तरीके से लाल सागर को पार करना, मन्ना और बटेर का प्रबन्ध होना और चट्टान से निकलने वाले जल के चमत्कार शामिल हैं। इन चमत्कारों को अस्वीकार करने के लिए किसी भी जन को एक विश्वसनीय ऐतिहासिक रिकॉर्ड के रूप में बाइबल को अस्वीकार करना होगा जिसके परिणामस्वरूप धर्मशास्त्रों की प्रेरणा को अस्वीकार करना है।

परमेश्वर अब उस प्रकार चमत्कारिक रूप से काम नहीं करता जैसा वह बाइबल के समय में किया करता था। अनेक लोग "चमत्कार" शब्द का प्रयोग, अद्भुत घटनाएँ अथवा लाभकारी घटना के लिए करते हैं जिसका श्रेय वे परमेश्वर को देते हैं। हमें इस बात को अस्वीकार नहीं करना चाहिए कि जो कुछ अच्छा संसार में हो रहा है वह वास्तव में परमेश्वर का किया हुआ काम है (याकूब 1:17)। हालांकि, यह बताने के लिए कि प्राकृतिक साधनों के माध्यम से परमेश्वर जो भी करता है, वह एक "चमत्कार" है, इस शब्द का उपयोग उस तरीके से करने के समान है जिस प्रकार बाइबल इसका इस्तेमाल नहीं करती। धर्मशास्त्र यह सिखाते हैं कि चमत्कारों का युग - बाइबल में किए गए चमत्कारों के समान परमेश्वर के काम का समय, निकल गया है।

दूसरा, परमेश्वर प्राकृतिक नियमों के द्वारा काम करता है। बाइबल सिखाती है जिन घटनाक्रमों को हम "प्राकृतिक" कहते हैं - सूर्य का उगना, बारिश का गिरना और घास का बढ़ना - ये सब काम परमेश्वर करता है। यीशु ने कहा, "[परमेश्वर] भले और बुरे दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मी और अधर्मी दोनों पर मेंह बरसाता है" (मत्ती 5:45)। यह नोट किया जाए कि *परमेश्वर* "अपना सूर्य उदय करता है" और "मेंह बरसाता है।" वास्तव में, जो कुछ "प्राकृतिक" नियमों से होता है वह परमेश्वर का काम है (देखें निर्गमन 4:10, 11)। जब कोई व्यक्ति बीमार हो जाता है और डॉक्टर के द्वारा दी गई दवा लेता है तब हो सकता है कि कोई यह दावा करे, "डॉक्टर [अथवा दवा ने] उसे चंगा कर दिया।" कोई अन्य व्यक्ति सम्भावित रूप से तर्क करेगा, "वह व्यक्ति प्रकृति के नियम के अनुसार ठीक हो गया; एक अर्थ में 'प्रकृति' ने उसे बीमार किया और 'प्रकृति' ने उसे ठीक कर दिया।" फ़िर भी मसीही लोग प्राकृतिक नियमों के काम को अस्वीकार किए बिना यह घोषणा कर सकते हैं कि, "परमेश्वर ने उसे ठीक किया।"

तीसरा, परमेश्वर प्रबन्धन के द्वारा काम करता है। जब हम यह कहते हैं कि परमेश्वर "प्रबन्धन के द्वारा" काम करता है तब हम बलपूर्वक यह कहते हैं कि परमेश्वर इस संसार में गैर-चमत्कारी तरीकों से काम करता है। परमेश्वर के प्रबन्धन का सबसे अच्छा कथन रोमियों 8:28 में देखने को मिलता है। वह सच्चाई निर्गमन में देखने को मिलती है और यह विशेष रूप में मूसा के जीवन में देखने को मिलती है। वह फ़िरौन के घराने में पला-बढ़ा। अगर फ़िरौन ने सब छोटे लड़कों की पीढ़ी को साफ़ करने का प्रयास नहीं किया होता तो मूसा फ़िरौन के महल में बड़ा नहीं किया जाता और साथ ही इस्राएल को मिस्र से निकाल ले आने के लिए तैयार नहीं किया जाता। क्या मूसा के प्रथम अस्सी वर्षों के जीवन में जो कुछ हुआ उसके लिए यह कहना चाहिए कि वह सब एक संयोग मात्र था? मसीही लोग इन सब घटनाओं को परमेश्वर के प्रबन्धन और गैर-चमत्कारी कामों के रूप में देखते हैं जिन्हें उसने अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया।

अधिकतर पाठक परमेश्वर के प्रबन्धों को मूसा के जीवन में देख सकते हैं। प्रश्न यह है कि क्या आज भी परमेश्वर प्रबन्ध करने के द्वारा काम करता है? रोमियों 8:28 ऐसा ही बताती है और मानवजाति का इतिहास और आरम्भिक कलीसिया के वर्णन - सम्भावित रूप से स्वयं हमारा इतिहास भी - इस बात के साक्ष्य उपलब्ध करवाते हैं कि वह ऐसा करता है। यह सच्चाई हमें आराम और उत्साह दे, विशेषकर उस समय जब हमारा दृष्टिकोण मन्द पड़ जाए।

चौथा, परमेश्वर लोगों के द्वारा काम करता है। परमेश्वर कुछ करना चाहता था: वह चाहता था कि उसके लोग मिस्र से छुड़ाए जाएँ। वह बिना मानवीय हस्तक्षेप के यह कर सकता था। (जैसा कि परमेश्वर ने सब कुछ बनाया इसलिए उसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं है।) इसके स्थान पर, जो वह करना चाहता था उसे करने के लिए उसने मानवीय एजेन्ट, मूसा का प्रयोग करने का चुनाव किया। काम परमेश्वर का था और इसका श्रेय परमेश्वर को दिया गया; फ़िर भी इसे करने के लिए परमेश्वर ने एक अविश्वसनीय मानव का प्रयोग किया। इसी प्रकार मसीही युग में, परमेश्वर चाहता है कि लोग बचाए जाएँ। उस काम को करने के लिए वह मानव एजेन्टों का प्रयोग करता है - ऐसे लोग जो पूरे विश्व में सुसमाचार का प्रचार करते हैं और उसे सिखाते हैं (मत्ती 28:18-20; रोमियों 10:12-17)। काम परमेश्वर का है और परमेश्वर को श्रेय मिलता है। फ़िर भी मानवजाति को चाहिए कि वे दी गई बुलाहट का प्रत्युत्तर दें और परमेश्वर को स्वीकृति दें कि वह काम कर सके (प्रेरितों 14:27)। हमें परमेश्वर की बुलाहट सुनने की इच्छा रखनी चाहिए और अपने सिर, हाथ, पाँव और मुँह को उसकी सेवा में उसके काम को पूरा करने के लिए काम में लेना चाहिए। जब परमेश्वर हमारे द्वारा कार्य करता है तब हमें चाहिए कि हम उसे महिमा दें।

उपसंहार। परमेश्वर वर्तमान में, प्रकृति और प्रबन्धन के द्वारा सक्रिय है परन्तु वह यह भी चाहता है कि अपनी इच्छा को हमारे द्वारा पूरा करे। क्या हम आज परमेश्वर के द्वारा इस्तेमाल होने की इच्छा रखते हैं? हम गाते हैं, "हमारा परमेश्वर, वह जीवित है।" आइए इस पर विश्वास करें और उसी प्रकार काम करें जैसा हम

विश्वास रखते हैं!

हारून, एक नबी की भूमिका का विवरण देता है (7:1, 2)

एक नबी की भूमिका क्या थी? परमेश्वर उसके मुँह में अपने शब्द रखता है और वह परमेश्वर की ओर से बोलता है; वह मात्र परमेश्वर की ओर से बोलने वाला व्यक्ति होता है। मूसा को चाहिए था कि वह "परमेश्वर-सा" ठहरे और हारून, मूसा का "नबी" (7:1, 2) बने। अन्य शब्दों में मूसा को "वे सब बातें सिखानी थी" (4:15)। हारून को, मूसा की ओर से "लोगों से" बोलना था, उसे मूसा के लिए "मुँह" ठहरना था (4:16)।

गलत शिक्षा सहित धर्म (7:22)

फ़िरौन के जादूगर मूसा के चिह्नों के समान कर पाए (7:22)। कैसे? सम्भावित रूप से तन्त्र-मन्त्र के द्वारा वे ऐसा कर सके। हालांकि उनके चिह्न तन्त्र-मन्त्र से किए गए थे फ़िर भी वे आकर्षित कर लेने वाले थे। नया नियम में एक समय में कुछ लोगों ने चमत्कार दिखाए (प्रेरितों 8:9-11; 2 थिस्स. 2:8-12; प्रका. 13:14; 16:13, 14; 19:20)। अन्य तरीकों से नया नियम मसीहयत के पीछे चलना भी सम्भव है। विशेष रूप से झूठे शिक्षकों ने मसीह की शिक्षा का एक विकृत रूप प्रस्तुत किया। यीशु ने झूठे शिक्षकों के आने के बारे में चेतावनी दी थी (मत्ती 7:15) और इस प्रकार उसके चेलों ने भी किया (1 यूहन्ना 4:1)। वर्तमान में गलत शिक्षा के साथ, मसीहयत भी अस्तित्व में है और सम्भावित रूप से जादूगरों के तन्त्र-मन्त्रों के समान बहुत ही मोहक है। जो लोग आज चमत्कार करने का दावा करते हैं ऐसे लोगों के धोखे से बचने के लिए हमें यह मालूम होना चाहिए कि गलत शिक्षा के साथ कुछ पंथ अस्तित्व में है और हमें नकली और असली के बीच अन्तर करना आना चाहिए। अन्ततः झूठे धर्म और सही मार्ग के बीच अन्तर को परमेश्वर आकर्षक रूप से प्रकट करेगा (मत्ती 7:21-23)।

समाप्ति नोट्स

[1]जॉन आई. डर्हम, *एक्सोडस,* वर्ड बिब्लिकल कमेन्ट्री, वोल. 3 (वाको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1987), 86. [2]उपरोक्त, 88. [3]अंबरटो कस्सुटो, *अ कमेन्ट्री ऑन द बुक ऑफ़ एक्सोडस*, ट्रान्स. इस्राएल एब्राहम्स (जरुसलेम: द मैगनेस प्रेस, 1997), 94. [4]डर्हम, 89. [5]*द पुलपिट कमेन्ट्री*, वोल. 1, *जेनेसिस एन्ड एक्सोडस*, एड. एच. डी. एम. स्पेन्स एन्ड जोसफ़ एस. एक्सेल (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: विम. बी. अड्र्समेन्स पब्लिशिंग कं., 1950), 166 में जॉर्ज रौलिंगसन, "एक्सोडस।" [6]नहूम एम. सर्ना, *एक्सप्लोरिंग एक्सोडस: द ओरिजिन्स ऑफ़ बिब्लिकल इस्राएल* (न्यु योर्क: स्कोकेन बुक्स, 1996), 67. [7]रोलिंगसन, 172. [8]आर. एलन कोल, *एक्सोडस: एन इन्ट्रोडक्शन एन्ड कमेन्ट्री*, टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेन्ट कमेन्ट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इन्टर-वर्सिटी प्रेस, 1973), 90. [9]उपरोक्त.